Introduction

प्राक्कथन

भारतीय मनीषियों ने मानव-जीवन के उत्थान के लिए जिस जीवन-दर्शन को प्रस्तुत किया है वह न केवल मनुष्य के बौद्धिक विकास से सम्बन्धित है, अपितु उसकी आन्तरिक चेतना के व्यापक और गहन धरातल को स्पर्श करता है। सदियों पूर्व से ही मानव-मन भौतिक जीवन की उन्नति के साथ-साथ अपने आंतरिक जगत में चेतना के भावात्मक विस्तार का आकांक्षी रहा है। चेतन-सत्ता के व्यक्त स्वरूपों के साथ भावात्मक तादात्म्य स्थापित करते हुए अपने आंतरिक जगत को अधिक व्यापक और उदात्त बनाने की प्रवृत्ति ने राष्ट्रीय चेतना को जन्म दिया है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि प्रकृति के नाना रूपों के साथ दीर्घकालीन भावात्मक एवं विचारात्मक सम्बन्ध स्थापित करनेवाली मानव-हृदय की प्रबल आन्तरिक प्रवृत्ति से राष्ट्रीय भावना का जन्म हुआ है। यह एक ऐसी आंतरिक प्रवृत्ति है जिसके आवेग में मनुष्य संसार की सभी मोह-माया को त्याग कर,आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों की बाजी लगाने के लिए तत्पर रहता है। चेतना की गहनतम अनुभूतियों की प्राप्ति के प्रयत्न में ही मानव मन की भावनाओं का उदात्त एवं परिष्कृत रूप राष्ट्रीय-चेतना के रूप में परिणत होता है।

'राष्ट्र' एवं 'राष्ट्रीय' भावना के स्वरूप के प्रतिपादन में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने उनके विभिन्न पक्षों को उद्‌घाटित करते हुए अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किये हैं। भारत में राष्ट्र की परिकल्पना के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है तथापि वर्तमान सन्दर्भ में सर्वसम्मति से यह स्वीकार किया गया है कि भारत में आधुनिक राष्ट्रीयता का बाह्य स्वरूप पराधीनता के युग में पाश्चात्य रीति-नीतियों और विचारधाराओं से यथेष्ट रूप से प्रभावित होते हुए भी अपने आन्तरिक रूप में प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों से परिपुष्ट है।

हिन्दी साहित्य के साथ राष्ट्रीय चेतना का सम्बन्ध प्राचीन है। आधुनिक युग के पूर्वार्द्ध में हिन्दी साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत रहा है। विदेशी दासता की जंजीरों से जकड़ी हुई जनता की दयनीय दशा, उसकी पीड़ायुक्त छटपटाहट और मुक्ति के लिए निरन्तर संघर्ष से उत्पन्न उनकी आशा-निराशा को मुखरित करने का श्रेय हिन्दी साहित्य को प्राप्त है। ऐसी स्थिति में हिन्दी गद्य-साहित्य के साथ राष्ट्रीय चेतना का सम्बन्ध और भी अधिक घनिष्ट सिद्ध होता है।एक प्रकार से दोनों के बीच चोली-दामन का रिश्ता है। हिन्दी गद्य साहित्य का जन्म ही क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन की गोद में हुआ है। दूसरी ओर हिन्दी के गद्य साहित्य ने तत्‌कालीन पुनरूत्थान की चेतना को

प्रभावात्मककता प्रदान करके जन-मानस तक पहुँचाने का श्रेयष्कर कार्य किया है। नवजागृति और क्रान्तिकारी विचारों का लक्ष्य था देश को विदेशी दासता की जंजीरों से मुक्त करवाके अपने प्राचीन गौरव के साथ इतिहास के पृष्ठ पर उसे पुनःस्थापित करना। भारत के जन-मन की उक्त भावना का देशव्यापी प्रसार-प्रचार का प्रमुख माध्यम था हिन्दी का गद्य साहित्य। काव्य की तुलना में हिन्दी गद्य-साहित्य के विभिन्न स्वरूप, समकालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पुनरूत्थान की चेतना को अधिक प्रभावात्मक रूप से जन-मानस तक पहुँचाने में सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है। भारतेन्दु हरिशचन्द्र, आ०महावीरप्रसाद द्विवेदी, प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, आ०रामचन्द्र शुक्ल आदि प्रसिद्ध हिन्दी के साहित्यकारों ने उपन्यास, नाटक, कहानी और निबन्ध आदि के द्वारा मानव-जीवन के मूल्यों को राष्ट्रीय स्तर पर अधिक सूक्ष्मता और गहराई के साथ प्रतिपादित करने का यत्न किया है।

पराधीनता के युग में स्वतन्त्रता की प्राप्ति का राजनैतिक उद्देश्य प्रमुख था जो राष्ट्रीय भावना का मुख्य आधार था। अतः इस युग के गद्य साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक सुधारवादी विचारधाराओं के साथ राजनीतिक स्वतन्त्रता के स्वर विशेष रूप से मुखर थे।स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश के सर्वांगी विकास और राष्ट्र के नव-निर्माण के लिए समकालीन परिस्थितियों के अनुरूप नई विचारधाराओं का सफल आकलन आवश्यक हो जाता है। अतः परवर्ती साहित्य में राष्ट्रीय भावना का स्वरूप स्वतः अपने पूर्ववर्ती स्वरूप से भिन्न प्रतीत होगा। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में इसी उद्देश्य की पूर्ति करते हुए आधुनिक कथा साहित्य में राष्ट्रीय स्वर के स्वरूप को उद्‌घाटित करने का यत्न किया है।

देश ने स्वतन्त्रता प्राप्ति की ५०वीं जयन्ति मनाई।इस कालावधि में देश के नव-निर्माण के लिए राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में बदलाव और विकास के लिए तत्‌सम्बन्धी नई-नई विचारधारों से सफल-असफल प्रयोग हुए हैं। राष्ट्र के नव-निर्माण में साहित्यकारों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है। साहित्यकार अपनी कृतियों में एक ओर समकालीन परिस्थितियों को प्रतिबिम्बित करता है तो दूसरी ओर अपनी सर्जनात्मक प्रक्रिया द्वारा देश के नवनिर्माण की नई दिशाओं का निर्देशन करता है। समकालीन रचनाकारों ने युगीन परिवेश के अनुरूप वस्तु-निरूपण एवं अभिव्यक्ति के नये प्रयोगात्मक स्वरूपों से साहित्य को समृद्ध किया है। अतः नये अनुशीलनों में वस्तु के नये स्वरूप या अभिव्यक्ति की नवीनता को उजागर करने का

यथेष्ट प्रयत्न किया गया है। उदाहरण स्वरूप - ' स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यास ', 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास','हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद', 'साठोत्तरी हिन्दी कहानी में पात्र और चरित्र-चित्रण', 'हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीलन', 'हिन्दी कहानी में मानव प्रतिमा'आदि रचनाएँ प्राप्त हैं। इनके अन्तर्गत मानव-जीवन में उभरती हुई मूल्यहीनता, सामाजिक विघटन, आधुनिक नगर-जीवन के संत्रास,राजनीति में फैली अराजकता, भ्रष्टाचार एवं नैतिक अवमूलन, प्रदेश विशेष की आँचलिक विशिष्टताओं के निरूपण के साथ तत्सम्बन्धी समस्याओं का चित्रण आदि से सम्बन्धित पृथक- पृथक अनुशीलन हुए हैं।गद्य-साहित्य के उक्त अध्ययनों में राष्ट्र के सार्वभौमिक स्वरूप के परिचय का अभाव सा प्रतीत होता है। यद्यपि कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में राष्ट्रीय भावना का स्फुट रूप पाया जाता है,लेकिन कथा साहित्य के क्षेत्र में राष्ट्रीय भावना के स्वरूप का समग्रतया विवेचन अब तक शेष है। प्रस्तुत शोधकार्य द्वारा इस अभाव की पूर्ति का एक छोटा सा प्रयत्न किया गया है।

आज देश के विभिन्न क्षेत्रों में विकास के नये स्वरूप प्रस्थापित हुए हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी एक आत्मनिर्भर विकसित एवं बड़े लोकतांत्रिक देश के रूप में भारत की प्रतिमा उज्जवलित हुई है,जो नि:सन्देह जनता के हृदय में गौरव की अनुभूति प्रदान करती है। लेकिन देश के सामने आज ऐसी कुछ गम्भीर परिस्थितियाँ भी निर्मित हुई है जो देश की जनता के लिए चिन्ता का विषय बनी हुई है।राजनीति के क्षेत्र में फैली अराजकता तथा भ्रष्टाचार, राजनेताओं का नैतिक पतन, सामाजिक जीवन में टूटते बिखरते रिश्ते,पाश्चात्य संस्कृति के आक्रमण से पदाघात भारत की सांस्कृतिक धरोहर, आर्थिक क्षेत्र में असमानता एवं सरकार की सफल-असफल नीतियों के दुष्परिणाम स्वरूप देश के अनेक भू-भागों में फैला अलगाववाद,गुंडागर्दी,आतंकवाद तथा देश की सीमाओं पर बढ़ते हुए पड़ोसी देशो के हिंसात्मक आक्रमण आदि आज के युग की प्रमुख राष्ट्रीय समस्याएँ हैं। देश का आम मनुष्य जब इनके दुष्प्रभाव से चिन्तित है तो विशेष संवेदनशील साहित्यकार कैसे मौन रह सकता है। स्वाभाविक है कि उनकी रचनाओं में इन समस्याओं का प्रभावशाली आकलन एवं उनके बुद्धिजीवी होने के कारण समस्याओं के निराकरण की सम्भावना बनी रहती है। आधुनिक कथा-साहित्य के अनुशीलन द्वारा इन अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-विषय को चुना गया है। यहाँ उल्लेखनीय है कि शोध विषय के विस्तार-भय से प्रस्तुत शोध कार्य को साठोत्तरी उपन्यास और कहानियों तक ही सीमित किया गया है।कथा-साहित्य के शेष रूपों के अध्ययन का मार्ग भी इससे

प्रशस्त होता है।

प्रस्तुत शोध-कार्य का अनुशीलन 'साठोत्तरी हिन्दी कथा-साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' नामक शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है। यह शोध-प्रबन्ध कुल छः अध्यायों में विभाजित है। प्रथम 'विषय-प्रवेश' के अध्याय में राष्ट्र विषयक अवधारणाओं के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। साथ ही राजनीति, देशप्रेम, आदि के साथ राष्ट्रीय चेतना के साम्य और अन्तर को तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी साहित्य की निकटवर्ती पृष्ठभूमि का आकलन किया गया है। जिसके द्वारा हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के विकास के विभिन्न सोपानों का परिचय वर्णित है।

शोध-ग्रन्थ का तृतीय अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी साहित्य के निर्माण में समकालीन परिस्थितियों की क्या भूमिका रही, इस विषय में अध्ययन यहाँ प्रस्तुत है।

चतुर्थ अध्याय, शोध-ग्रन्थ का महत्वपूर्ण अध्याय कहा जा सकता है। सन् १९६० के बाद लिखे गये लगभग पच्चीस उपन्यासों का परिचय इसमें प्रस्तुत है। वैसे तो छठे दशक के पश्चात छोटे-मोटे अनेक उपन्यासों की रचना हुई है,लेकिन यहाँ प्राप्त उपन्यासों में से राष्ट्रीय भावना से सम्बन्धित उपन्यासों का चयन करके तत्सम्बन्धी अनुशीलन ही यहाँ प्रस्तुत है।सर्वप्रथम बार एक साथ इतने अधिक उपन्यासों का परिचय देते हुए उनमें प्राप्त राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप को उद्घाटित करने का सम्यक प्रयत्न किया गया है। युगीन परिवेश की अभिव्यक्ति द्वारा देश का राजनीतिक अवमूलन, राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक विघटन, बेरोजगारी, ग्राम्य जीवन-शैली में आ रहे बदलाव, आधुनिक नारी के प्रगतिशील स्वरूप का अकन आदि द्वारा समकालीन प्रमुख समस्याओं के निरूपण और समाधान की दिशाओं का चित्रण करते हुए राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है।

पंचम अध्याय, कहानियों के रूप में प्राप्त कथा-साहित्य से सम्बन्धित है। इसमें समकालीन प्रमुख कहानीकारों की लगभग सत्तर महत्त्वपूर्ण कहानियों का अध्ययन किया है। इनमें से राष्ट्रीय भावना से सम्बन्धित लगभग बत्तीस कहानियों का परिचय यहाँ प्रस्तुत है। कहानियों के संक्षिप्त कथा-फलक पर राष्ट्रीय-तत्वों का विशद निरूपण सम्भव नहीं। तथापि राजनीतिक,सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में युगीन परिस्थितियों के यथार्थ परिवेश द्वारा लेखकों ने नवीन राष्ट्रीय भावना या समस्याओं को निरूपित

करने का यत्न किया है। इन कहानियों के द्वारा व्यक्ति और परिवार के टूटते रिश्ते, सांस्कृतिक आदर्शो का अवमूलन, राजनीति में फैला हुआ भ्रष्टाचार, सामाजिक मूल्यों का विघटन, नारी के नये उभरते हुए स्वरूप, बेरोजगारी, युगीन परिस्थितियों से उभरती हुई त्रासदी, मानसिक संत्रास आदि द्वारा राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न पक्षों को उद्‌घाटित करने का यत्न किया गया है।

छठ्ठा अध्याय, उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें समग्र शोध कार्य की उपलब्धियों, समस्याओं, विशेषताओं आदि से सम्बन्धित निष्कर्षो को प्रबंध की प्रस्थापनाओं के रूप में रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। साठोत्तरी कथा-साहित्य के रूप में उपन्यास और कहानियों के अध्ययन द्वारा समकालीन राष्ट्रीय चेतना को उजागर किया गया है। घटना-प्रसंग,चरित्र-वर्णन तथा परिवेश के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप का उद्‌घाटन तथा उनके साहित्यिक मूल्यों का प्रतिपादन इनमें प्रमुख है। राष्ट्र के नवनिर्माण में सम्वेदनशील एवं जागरूक साहित्यकारों के महत्वपूर्ण योगदान का परिचय भी इसमें प्राप्त है।

'साठोत्तरी हिन्दी कथा-साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' प्रस्तुत शोध-कार्य का लक्ष्य है। आजादी के पहले राजनीतिक आन्दोलन, सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का व्यापक और प्रखर स्वर उद्‌घोषित था,वैसा आज नहीं है तथापि यह भी निर्विवाद रूप से सिद्ध है कि समकालीन साहित्य भी व्यक्ति के स्थान पर समष्टि के हित से प्रेरित है। अर्द्ध शताब्दी के पश्चात निर्मित साहित्य के अनुशीलन से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय चेतना का तात्पर्य सिर्फ देशभक्ति के गीत गाना या अतीत का स्मरण करना ही नहीं है। देश को हानि पहुँचाने वाले तत्वों की पहचान, आम जनता की आशा-आकांक्षा, देश की राजनीतिक, सामाजिक,आर्थिक उन्नति एवं सांस्कृतिक उत्थान के अवरोधक तत्वों की पहचान आदि भी राष्ट्रीय चेतना के परिचायक हैं। आज देश में फैली अनुशासनहीनता, सांस्कृतिक अवमूलन, भ्रष्टाचार, आतंकवादी गतिविधियाँ, देश की राजनीति में फैला अलगाववाद, भाषावाद, प्रान्तवाद, साम्प्रदायिकता आदि के कारण राष्ट्रीय भावना का अभाव सा प्रतीत होता है लेकिन साठोत्तरी कथा साहित्य का अनुशीलन इस बात को प्रमाणित करता है कि जनमानस आज भी राष्ट्रीय-चेतना से शून्य नहीं है।राष्ट्रीय चेतना के विविध पक्षों का निरूपण और उनके स्वरूप का परिचय इस शोध कार्य द्वारा सम्भव हो पाया है। आनेवाली युवा पीढ़ी के ह्रदय को राष्ट्रीय चेतना से अभिभूत करने में समकालीन साहित्य का अनुशीलन

भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसकी पूर्ण सम्भावना इस शोध-कार्य द्वारा स्थाप्ति है। अत:कहा जा सकता है कि देश के पतनोन्मुखी सामाजिक-जीवन को ऊपर उठाने और जनमानस में राष्ट्रीय चेतना के पुर्नस्थान की प्रक्रिया में आज का साहित्य भी उपयोगी है।

कृतज्ञता - ज्ञापन --

मेरे देशप्रेम के संस्कारो को इस शोध कार्य के रूप में साकार करने की प्रेरणा देनेवाली निर्देशिका पूज्यनीया गुरू डॉ० कु.अनुराधा दलाल, रीडर हिन्दी विभाग, कला संकाय, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के प्रति मैं क्या कहूँ ? इसके कुशल मार्ग निर्देशन से ही यह शोध कार्य सम्पन्न हो सका। विषय निर्धारण से लेकर कार्य के अन्त तक उन्होंने अपनी गहरी अभिरूचि प्रदर्शित की है।शोध प्रबंध लिखते वक्त उन्होंने अपने विचारात्मक दृष्टिकोण से मेरी अनेक उलझनों, शंकाओं का समाधान करते हुए हमेशा ही मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। उनके आत्मीय अनुग्रह के प्रति में श्रद्धानत हूँ।

मेरे शोध कार्य में जिनका स्नेहपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है उनमें हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० डॉ० पारूकांत देसाई, श्रद्धेय डॉ० प्रताप नारायण झा, आदरणीय डॉ०कु. प्रेमलता बाफना, डॉ० अक्षय कुमार गोस्वामी, डॉ० भगवानदास कहार, डॉ० विष्णुविराट चतुर्वेदी, डॉ०शैलजा भारद्वाज, डॉ०इन्दु शुक्ला, डॉ०ओमप्रकाश यादव आदि प्रमुख हैं। इन सभी के प्रति मैं अपनी श्रद्धा व्यक्त करता हूँ। इन्होंने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर कार्य करने के लिए अपना समुचित सुझाव एवं आशीर्वाद दिया। हिन्दी विभाग के अन्य सभी सदस्यों के प्रति भी मैं अभारी हूँ क्योंकि इन गुरूजनों ने मुझे हमेशा प्रोत्साहित किया है। मैं हिन्दी विभाग के शोध-छात्र-छात्राओं के स्नेहयुक्त सहयोग के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

अपने इस शोध कार्य में मुझे जिन विद्वानों का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से स्नेहयुक्त सहयोग प्राप्त हुआ है, उनके प्रति मैं श्रद्धानत हूँ। प्रो० डॉ० कुँवरपाल सिंह (अलीगढ), डॉ०रमाकान्त शर्मा (अहमदाबाद), प्रो०डॉ०बालेन्दु शेखर तिवारी (राँची),प्रो० डॉ०शिवकुमार मिश्र, भूतपूर्व हिन्दी विभाग अध्यक्ष, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, विद्यानगर, प्रो० डॉ० मदनगोपाल गुप्त, पूर्व हिन्दी विभाग अध्यक्ष, म.स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा, प्रो० डॉ० दयाशंकर शुक्ल, पूर्व हिन्दी विभाग अध्यक्ष, म.स. विश्वविद्यालय बडौदा, एवं पूर्व प्रिंसिपल डॉ० वामन राव अहीरे, एम. के अमीन.आर्टस एण्ड कोर्मस कॉलेज, पादरा (बडौदा), प्रो० डॉ० सनत व्यास, अध्यक्ष हिन्दी विभाग सरदार पटेल यूनिवर्सिटी,

डॉ० निरूपमा पोटा, डॉ० मदन मोहन शर्मा, डॉ० नवनीत चौहान, सुनीता सुपहिया, प्रिंसिपल श्री एल.पी.जोशी, आर्टस एण्ड सायन्स कॉलेज, बोरसद, प्रिंसिपल श्री आर.पी. सिंह, महिला आर्टस कॉलेज, मेहसाणा, डॉ० शीला व्यास आदि। इन्होंने अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद भी यथावाश्यक समय प्रदान किया। इसे मैं अपने प्रति इन सभी विद्वानों का स्नेह ही समझता हूँ।इनके मानवतावादी उदार व्यक्तित्व तथा अपार पाण्डित्य के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करता हुआ आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका मार्ग-दर्शन मुझे प्राप्त होता रहेगा।

परमपूज्य माता एवं पिताजी के वात्सल्यसभर प्रेरणा और आशीर्वाद का ही यह परिणाम है कि शोध-कार्य में आने वाले अवरोधों को पार करके इसे सम्पन्न करने में समर्थ हुआ हूँ। उनके प्रति मैं श्रद्धा से नतमस्तक होकर प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने स्नेहाशिष से सदैव मेरा पथ आलोकित करते रहेंगे।

अपनी इस लम्बी शोध यात्रा के दौरान मुझे जिन-जिन संस्थानों का सहयोग प्राप्त हुआ है उनके प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ। मेरे शोध-कार्य में सर्वाधिक सहायक संस्थान के रूप में महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी की हंसा मेहता लाइब्रेरी, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी, विद्यानगर, आर्टस, कोमर्स एण्ड सायन्स कॉलेज की लाइब्रेरी बोरसद, आर्टस कॉलेज लाइब्रेरी मेहसाणा आदि इन सभी ग्रन्थालयों के प्रति भी अपना विनीत आभार प्रकट करता हूँ।

भारतमाता और हमारी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी की सेवा में समर्पित यथाशक्ति किये गये मेरे इस छोटे से कार्य को विद्वानजन उदारता से पसन्द करके स्वीकार करेंगे। विद्वानों से मेरी विनम्र प्रार्थना हे कि मेरे इस शोध-कार्य में जो भी आपको योग्य और रूचिकर लगे उसे उदारता से स्वीकार करें और मेरी अज्ञानता से हुई त्रुटियों को उदार - हृदय से क्षमा करें।

राजेश सिंह